भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
IIT INDIAN INSTITUTE OF TECHNOLOGY
BANARAS HINDU UNIVERSITY

☎ 0542 2366676: e-mail : pro.ppc@itbhu.ac.in

कुलसचिव कार्यालय
(प्रेस एवं प्रचार प्रकोष्ठ)
दैनिक जागरण
Office of the Registrar
(Press & Publicity Cell)
दिनांक : 18.03.2019

नजीर इतिहास बचाने के लिए 60 लाख की चिमनी पुरा छात्र ने कराई स्थापित

आइआइटी ने बनाया 'खास', संजोया इतिहास

- आइआइटी बीएचयू में चेन्नई की बेंको कंपनी ने लगवाई नई चिमनी
- कंपनी के मालिक पी. रामाचंद्रन आइआइटी के 1982 बैच के थे छात्र
- पुरानी यादों को जिंदा रखने व गुरुजनों की इच्छा को दिया सम्मान

जागरण संवाददाता, वाराणसी : जिस बीएचयू ने चेन्नई निवासी छात्र पी. रामा चंद्रन को गढ़कर इतना खास और योग्य बनाया कि वे लोगों को काम दे सकें, उसी पुरा छात्र ने इस गौरवशाली विवि की एक विरासत संजोने का बीड़ा उठाया। पुराछात्र पी. रामाचंद्रन की कंपनी बेंको में तैयार नई चिमनी रविवार को आइआइटी के सुपर कंप्यूटर सेल भवन के पीछे स्थित पुरानी चिमनी की जगह लगाई गई। चेन्नई स्थित बेंकों कंपनी के इंजीनियरों ने क्रेन की मदद से पुरानी चिमनी को हटा पुराने बेस पर नई चिमनी रखी। नई चिमनी पर करीब साठ लाख रुपये लागत आई है। पुरानी चिमनी से बीएचयू अंकित ईंटें मिली हैं। जिन्हें आइआइटी बीएचयू सुरक्षित रखेगा।

बनारस के नाम से ही बनाई कंपनी : आइआइटी बीएचयू के 1982 बैच के पुरातन छात्र पी. रामाचंद्रन यहां से पढ़ाई पूरी कर चेन्नई चले गए। वहां उन्होंने एक कंपनी बेंको खोली। वे बीएचयू आइआइटी से इतने प्रभावित थे कि अपनी कंपनी का नाम बेंको (बनारस इंजीनियरिंग कालेज) रखा। उन्होंने कर्मियों को हवाई जहाज से आइआइटी में चिमनी लगाने भेजा है।

आइआइटी बीएचयू के सुपर कंप्यूटर सेंटर के पीछे बेंको की लगाई गई चिमनी ● जागरण

गुरुजनों से प्रेरित होकर किया काम

सिविल इंजीनियरिंग विभाग के प्रो. रामजी अग्रवाल के साथ इंस्टीट्यूट के मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग के प्रो. एसके शर्मा की पहल पर पी. रामाचंद्रन ने यहां नई चिमनी लगाने में पूर्ण सहयोग देने का न केवल आश्वासन दिया बल्कि उसे पूरा भी किया।

छात्रों का है भावनात्मक जुड़ाव : प्रो. रामजी अग्रवाल ने कहा कि चिमनी से केवल शिक्षकों का ही जुड़ाव नहीं है बल्कि पुरातन छात्रों का भी भावनात्मक रिश्ता है। पुरातन छात्रों को इस कार्य के लिए मोटिवेट किया गया। इसके बाद उन्होंने स्वेच्छा से इसे पूरा कराया।

बिजली के लिए 1922 में बीएचयू में बनी थी पहली छोटी चिमनी : बीएचयू परिसर में स्थित आइआइटी में सन् 1922 में यहां 100 किलोवाट बिजली उत्पादन के लिए पहली छोटी चिमनी लगी थी। इसका उद्देश्य छात्रों को सिखाना था कि कैसे ब्वायलर से बिजली उत्पादन होता है। उस समय बनारस में कहीं भी बिजली नहीं थी। बीएचयू परिसर में प्रमुख चौराहों, हास्टल गेट व प्रमुख कार्यालयों के पास स्ट्रीट लाइट से इसका कनेक्शन था। सन् 1930 में क्षमता बढ़ा कर 1000 किलोवाट की गई। इसके लिए बड़ी चिमनी लगाई गई। इससे बीएचयू परिसर से अस्सी क्षेत्र तक बिजली सप्लाई होती थी। वर्ष 1990 के आसपास ऊपर की चिमनी गिर गई।

पुरा छात्र पी. रामचंद्रन के इस काम से प्रेरित होकर आइआइटी बीएचयू के डायरेक्टर ने भी इस क्षेत्र का जल्द ही सुंदरीकरण कराने का भरोसा दिया है।